णमोकार-पैंतीसी विधान

एवं

जिनस्तुति विधान

रचयिता

बुंदेली संत अनेक विधान रचयिता

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति : **णमोकार-पैंतीसी एवं जिनस्तुति विधान**
आशीर्वाद : **संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित**
आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार : **अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत**
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक : **बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना**
संस्करण : **द्वितीय, 1100 प्रतियाँ**
कवर-पृष्ठ : **प्राची जैन शिवपुरी**
प्रसंग : **22वाँ चातुर्मास 2020**
शिवपुरी (म. प्र.)
लागत मूल्य : **12/-**
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : श्री जैनोदय विद्या समूह
संपर्क-9425128817
मुद्रक : **विकास आफसेट, भोपाल**

पुण्यार्जक परिवार
श्रीमती विद्यादेवी के सोलहकारण व्रत एवं चारित्रशुद्धि
(1234) व्रत के उद्यापन के उपलक्ष में
श्री अशोकचंद-श्रीमती विद्यादेवी जैन
श्रीमती संगीता-प्रहलाद जैन, संजीव-श्रीमती सरस्वती,
पवन-श्रीमती निशा, दिलीप-श्रीमती बबीता,
सुरेन्द्र-श्रीमती भारती, पलाश-श्रीमती मेघवर्षा,
साक्षी, अनमोल, सोनाली, अवनी, सम्यक जैन एवं
समस्त परिवार नरवर-शिवपुरी (म.प्र.)

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

णमोकार महामंत्र पूजन

स्थापना

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, सदा रहे जयवंत।
परमेष्ठी वाचक भजें, णमोकार महामंत्र॥

(ज्ञानोदय)

महामंत्र जो शब्द ब्रह्म है, अनादि अनंत मंत्र रहा।
सब मंगल में पहला मंगल, दुख हर्ता सुख तंत्र रहा॥
यह अर्हंत सिद्ध आचार्यों, उपाध्याय मुनि का वाची।
णमोकार की पूजा करने, श्रद्धा नाँची गुण वाँची॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सुभौम नामक चक्री ने जब, णमोकार जल पर लिखकर।
पैरों द्वारा मिटा दिया तो, नरक गया श्रद्धा खोकर॥
श्रद्धालु इसके आश्रय से, जन्म आदि दुख पाप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

कैंसर, हृदयाघात, कोढ़ सम, महाभयंकर तपते रोग।
हर कर रोगी कामदेव हों, णमोकार का पा संयोग॥
मैनारानी श्रीपाल सम, शीतल हों संताप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आणं-ताणं कछु ना जाणं, सेठ वचन परमाणं हैं।
सूली बदले सिंहासन में, डवाँडोल पाते गम हैं॥
अंजन बना निरंजन हम भी, अक्षय विद्या सिद्ध करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जहाँ सुरक्षित शील नहीं हो, ब्रह्मचर्य पर संकट हों।
णमोकार की माला जपकर, शीघ्र काम कामी पट हों॥
सेठ सुदर्शन सीता रानी, जैसे भय अभिशाप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सेठ धनंजय के बेटे को, विषधर ने विषपान दिया।
मरण तुल्य भी जाग उठा ज्यों, णमोकार का ध्यान किया॥
भोजन भजन मन्त्र का करके, विषय विषों की क्षुधा हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

विद्युत चोर चुरा कर मणियाँ, खुद को पहले छिपा लिया।
बंधक हो फिर णमोकार जप, भाग्य सितारा जगा लिया॥
भूले-भटकों का साथी जो, मंत्रदीप में जोत भरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अब तक जितने सिद्ध बने या, कर्म नशाए आठों जो।
पूर्व भवों में रचे रचाए, णमोकार के पाठों को॥
मंत्र हवन कर कर्म हनन को, भक्त धूप ले हवन करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

णमोकार पर रखें भरोसा, जिसका ऐसा फल होगा।
हर मुश्किल का हल होगा रे, आज नहीं तो कल होगा॥
मन्त्र जाप से विश्व शांति हो, विघ्न अमंगल श्राप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

इक पलड़े पर णमोकार हो, इक पर दुनियाँ सारी हो।
चलो तराजू से तौलें तो, णमोकार ही भारी हो॥
इसकी महिमा वाँच न पाएँ, अर्घ्यों का आलाप करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

णमोकार के पाँच पद, भजकर गाएँ गान।
सो जयमाला हम कहें, करने निज कल्याण॥
अर्हत् सिद्धाचार्य को, णमो-णमो कर जोड़।
उपाध्याय मुनि साधु को, नमोऽस्तु लाख करोड़॥

(चौपाई)

सब मंत्रों का रहा मंत्र जो, सब मंत्रों का जनक मंत्र वो।
महामंत्र है मंत्र राज है, जिनशासन का मुकुट ताज है॥1॥
णमोकार यह मंत्र निराला, पूर्ण मनोरथ करने वाला।
पाँच पदों का ये धारी है, चित् चैतन्य चमत्कारी है॥2॥
प्रथम णमो अरिहताणं है, अर्हंतों को नमन नमन है।
जो छ्यालीस मूलगुण धारी, समवसरण की महिमा न्यारी॥3॥

पुनः णमो सिद्धाणं भज लें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु कर लें।
अष्टगुणी चेतन के स्वामी, सिद्ध बनें हम भी आगामी॥4॥
पुनः णमो आइरियाणं है, आचार्यों के सेवक हम हैं।
शिक्षा-दीक्षा देकर तारें, हमको भव से पार उतारें॥5॥
णमो उवज्झायाणं वाँचो, उपाध्याय के पद में नाँचो।
ज्ञान दीप दे मार्ग दिखाएँ, रत्नत्रय देकर चमकाएँ॥6॥
णमो लोए सव्वसाहूणं को, नमस्कार हो साधू जन को।
नग्न दिगंबर संत महंता, इनसे जिनशासन जयवंता॥7॥
पाँच पदों के पैंतीस अक्षर, अट्ठावन मात्रायें जपकर।
ऐसे णमोकार को ध्याओ, अपनी नैया पार लगाओ॥8॥
ऐसो पंच चार पद ध्याता, जो नवकार मंत्र कहलाता।
मंगलमय मंगल कहलाता, णमोकार हर पाप नशाता॥9॥
णमोकार को जिसने ध्याया, उसने शीघ्र सहारा पाया।
पल में अंजन बना निरंजन, सूली बन गई झट सिंहासन॥10॥
शीतल हुई अग्नि की ज्वाला, सर्प बने पुष्पों की माला।
श्वान बना सुर सुन्दर न्यारा, बैल बना सुग्रीव कुमारा॥11॥
णमोकार के पद्य सुनाके, राम बने रामायण पाके।
पावन बनी सती सीता जी, चंदनवाला जीती बाजी॥12॥
णमोकार जब पार्श्व सुनाए, नाग-नागिनी सुर पद पाए।
पूरी कथा कौन कह पाए, हम तो सादर शीश झुकाएँ॥13॥
यही प्रार्थना अंत हमारी, जब तक मिले न मोक्ष सवारी।
णमोकार का मंत्र न भूलें, रत्नत्रय धर आतम छू लें॥14॥

रोम-रोम में णमोकार है, श्वांस-श्वांस में णमोकार है।
प्राण-प्राण में णमोकार है, भक्तों का धन णमोकार है॥15॥
अपराजित यह णमोकार है, मृत्युंजय यह णमोकार है।
अनादिमंत्र यह णमोकार है, महामंत्र यह णमोकार है॥16॥
रोग निवारक णमोकार है, विघ्नविनाशक णमोकार है।
संकटमोचक णमोकार है, पाप विनाशक णमोकार है॥17॥
दुखनाशक यह णमोकार है, सुखकारक यह णमोकार है।
चिदानंद कर णमोकार है, मोक्षधाम कर णमोकार है॥18॥
णमोकार तो णमोकार है, णमोकार तो णमोकार है।
णमोकार तो णमोकार है, णमोकार तो णमोकार है॥19॥

(सोरठा)

णमोकार की गूँज, गूँजे अंतर भाव से।
आत्म सिद्धि को पूज, हो नमोऽस्तु नत भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

णमोकार का मंत्र दे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, णमोकार जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

(दोहा)

णमोकार का मंत्र है, मंत्र जनक सरताज।
णमो-णमो की जाप कर, पुष्पांजलि हो आज॥

(पुष्पांजलिं...)

णमो अरिहंताणं संबंधी अर्घ्य

(हाकलिका)

ण बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
रोग शोक जो दर्द हरे, जिनगुणधन संपत्ति भरे॥

ॐ ह्रां ण बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 1 ॥

मो बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
राग-द्वेष वा मोह हरे, कार्य हमारे सफल करे॥

ॐ ह्रां मो बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 2 ॥

अ बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
अजर अमर रक्षा करता, चित चैतन्य हमें करता॥

ॐ ह्रां अ बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 3 ॥

रि बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
ऋद्धि-सिद्धि सुख का दाता, आत्म रमण नित करवाता॥

ॐ ह्रां रि बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 4 ॥

हं बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
कर्म हंत अरिहंत करे, जिनशासन जयवंत करे॥

ॐ ह्रां हं बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 5 ॥

ता बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
तारक है सबको तारे, भक्तातम को शृंगारे॥

ॐ ह्रां ता बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 6 ॥

णं बीजाक्षर जाप जपें, णमोकार अरिहंत भजें।
ग्रह भय विभ्रम नाश करे, संयम राह प्रकाश करे॥

ॐ ह्रां णं बीजाक्षर रूप अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 7 ॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

सात मंत्र अरिहंत के, ऋद्धि-सिद्धि दे दान।
बनने को अरिहंत हम, करते नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं अर्हत् परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं...।

णमो सिद्धाणं संबंधी अर्घ्य (सखी)

ण बीजाक्षर के द्वारा, प्रभु सिद्ध भजे जग सारा।
तन मन के दोष नशाएँ, हम णमोकार को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं ण बीजाक्षर रूप सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 8 ॥

मो बीजाक्षर के द्वारा, प्रभु सिद्ध भजे जग सारा।
वो मोक्ष गुणी आगामी, हों शीघ्र जगत के स्वामी॥

ॐ ह्रीं मो बीजाक्षर रूप सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 9 ॥

सिद् बीजाक्षर के द्वारा, प्रभु सिद्ध भजे जग सारा।
सिद्धालय के अधिवासी, शास्वत सुख के प्रत्यासी॥

ॐ ह्रीं सिद् बीजाक्षर रूप सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 10 ॥

धा बीजाक्षर के द्वारा, प्रभु सिद्ध भजे जग सारा।
वो धरे अनंत गुणों को, वो हरे अनंत दुखों को॥

ॐ ह्रीं धा बीजाक्षर रूप सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 11 ॥

णं बीजाक्षर के द्वारा, प्रभु सिद्ध भजे जग सारा।
वो कर्म प्रकृतियाँ नाशे, सिद्धों के शहर निवासे॥

ॐ ह्रीं णं बीजाक्षर रूप सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 12 ॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पाँच मंत्र प्रभु सिद्ध के, करें भक्त निर्वाण।
बनने को प्रभु सिद्ध हम, करते नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं...।

णमो आइरियाणं संबंधी अर्घ्य (चौपाई)

ण बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
व्यसन बुराई पाप नशाए, मुनि दीक्षा जो शीघ्र दिलाए॥

ॐ ह्रूं ण बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 13 ॥

मो बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
मोह आदि की हरे समस्या, देता संयम त्याग तपस्या॥

ॐ ह्रूं मो बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 14 ॥

आ बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
भय आतंक विश्व से हरता, देकर अभय सुखी जो करता॥

ॐ ह्रूं आ बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 15 ॥

इ बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
चलता फिरता ईश्वर जैसा, कौन दिखे आचार्यों जैसा॥

ॐ ह्रूं इ बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 16 ॥

रि बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
वृषभरूप शुभ धर्म दिलाए, वैर हरे मैत्री सिखलाए॥

ॐ ह्रूं रि बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 17 ॥

या बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
यातायात हरे पुद्गल का, रत्नत्रय दे मोक्षमहल का॥

ॐ ह्रूं या बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 18 ॥

णं बीजाक्षर पाठ करें हम, णमोकार आचार्य भजें हम।
सभी कषायों का जो हंता, क्षमा आदि से जय-जयवंता॥

ॐ ह्रूं णं बीजाक्षर रूप आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 19 ॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

सात मंत्र आचार्य के, भक्त हृदय के प्राण।
चरण शरण की प्राप्ति को, करते नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं आचार्य परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं...।

णमो उवज्झायाणं संबंधी अर्घ्य (अडिल्ल)

ण बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
हमें बचाए मिथ्या भय अज्ञान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं ण बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 20 ॥

मो बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
हमें बचाए दुखदायक अभिमान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं मो बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 21 ॥

उ बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
स्व-पर प्रकाशित करता केवलज्ञान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं उ बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 22 ॥

वज बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
आतम शृंगारित करता निर्वाण से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं वज्र बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 23 ॥

झा बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
हमें मिलाए शुद्ध चेतना ज्ञान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं झा बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 24 ॥

या बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
मोक्ष घुमाए रत्नत्रय के यान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं या बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 25 ॥

णं बीजाक्षर णमोकार के साथ है।
उपाध्याय परमेष्ठी वाचक जाप है॥
शुद्ध बनाए धर्म-शुक्ल शुभ ध्यान से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रौं णं बीजाक्षर रूप उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 26 ॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

सात मंत्र उवज्झाय के, दूर करें अज्ञान।
तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति को, करते नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं उपाध्याय परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं...।

णमो लोए सव्व साहूणं संबंधी अर्घ्य (अर्द्ध जोगीरासा)

ण बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के महामंत्र से, भय दुख पाप नशाएँ॥

ॐ ह्रः ण बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 27 ॥

मो बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।

णमोकार के मंत्र जाप से, सभी कषाय नशाएँ॥

ॐ ह्रः मो बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 28 ॥

लो बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के पाठ भजन से, लोक पूज्यपद पाएँ॥

ॐ ह्रः लो बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 29 ॥

ए बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के महा ज्ञान से, एकाकी पद पाएँ॥

ॐ ह्रः ए बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 30 ॥

स० बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के महा ध्यान से, सर्व-उच्चपद पाएँ॥

ॐ ह्रः स० बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 31 ॥

व बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के महा तीर्थ से, भोग-विकार नशाएँ॥

ॐ ह्रः व बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 32 ॥

सा बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार की महा नाव से, भवसागर तिर जाएँ॥

ॐ ह्रः सा बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 33 ॥

हू बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार के धर्म यान से, लोकशिखर वस जाएँ॥

ॐ ह्रः हू बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 34 ॥

णं बीजाक्षर पूज-पूज के, साधु रूप को ध्याएँ।
णमोकार की भक्ति अर्चना, करके सुख पा जाएँ॥

ॐ ह्रः णं बीजाक्षर रूप साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं... ॥ 35 ॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पूज्य मंत्र नव साधु के, करें जगत कल्याण।
पाप-व्यसन के नाश को, करते हैं नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं साधु परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं...।

समुच्च्य पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

पाँच पदों के पैंतीस अक्षर, णमोकार का मंत्र रहा।
यही पंच नमस्कार मंत्र तो, सब पापों को हंत रहा॥
हर मंगल में पहला मंगल, उत्तम शरण प्रदाता है।
ऋद्धि-सिद्धि दे समृद्धि दे, सबका भाग्य विधाता है॥

(दोहा)

पैंतीस अर्घ्य चढ़ाए के, पूर्ण-अर्घ्य अब होंए।
णमोकार को नमोऽस्तु कर, णमोकार मय होंए॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

(णमोकार मंत्र की जाप करें)

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

णमोकार नवकार है, मृत्युंजय सरताज।
यशोगान करने कहें, जयमाला हम आज॥

(जोगीरासा)

णमो शब्द से शुरू हुआ सो, णमोकार यह जानो।
वेद-ऋचा में सभी दिशा में, कण-कण में यह मानो॥
जो विश्वास सहित स्वीकारे, उसका हुआ सुमंगल।
विराधना जो इसकी करता, उसका हुआ अमंगल॥1॥
भक्त सुमंगल अपना करने, णमोकार स्वीकारें।
तरह-तरह की सिद्धि हेतु सब, नाना नाम पुकारें॥
इसे कहें मृत्युंजय कोई, शुभ नवकार बताए।

अनादिनिधन भी कोई कहता, अपराजित समझाए॥2॥
पंचनमस्कार कोई कहता, सम्मोहन भी कोई।
उच्चाटन विद्वेषण कहता, मंत्र जनक भी कोई॥
जिसकी जैसी श्रद्धा होती, भक्त मानते वैसा।
आन-बान यह शान हमारी, हम तो मानें ऐसा॥3॥
अतः पाठ कर ठाठ बढ़ाएँ, कभी ध्यानकर ध्याएँ।
कभी जाप कर पाप नशाएँ, कभी ज्ञान में लाएँ॥
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, णमोकार में आएँ।
णमोकार की श्रेष्ठ अवस्था, ज्ञान-चेतना पाएँ॥4॥

(सोरठा)

णमोकार का मंत्र, मंगलमय मंगलकरण।
दे समृद्धि यंत्र, नमोऽस्तु कर पूजें चरण॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

णमोकार का मंत्र दे, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, णमोकार जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

अंकुर कॉलोनी वसे, सागर पारसनाथ।
णमोकार विधान रचे, नशे दुखों की रात॥
दो हजार अठरह दिसम्, गुरु तेरह तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥इति॥

णमोकार विधान आरती

(लय-गरवा...)

आरती - आरती - आरती।
णमोकार की उतारें हम आरती॥

1. णमो अरिहंताणं पद पहला, पाप हरे करे जग का भला।
   भक्तों को भव से तारती॥ णमोकार...
2. णमो सिद्धाणं पद है दूजा, सिद्ध समूह की कर लो पूजा।
   मोक्षमहल में धारती॥ णमोकार...
3. णमो आइरियाणं पद तीजा, आचार्यों पर यह जग रीझा।
   दीक्षा दे शिव वारती॥ णमोकार...
4. णमो उवज्झायाणं पद चौथा, सम्यग्ज्ञान बिना सब थोथा।
   ज्ञान का दीया उजारती॥ णमोकार...
5. णमो लोए सव्वसाहूणं पंचम, सच्चे साधु हैं धर्म की आतम।
   मुक्ती-रथ के सारथी॥ णमोकार...
6. पाँच पदों के पैंतीस अक्षर, दुख हरते सुख देते भर-भर।
   'सुव्रत' की नैया उतारती॥ णमोकार...

===

जैन धर्म तो णमोकार मंत्र से शुरु हो, करो।	णमोकार से बड़ा मंत्र विश्व में कोई नहीं है।	णमोकार तो सभी मंत्रों का जन्म-दाता मंत्र है।

जिनस्तुति विधान

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर जिनवर रहे, गुण समूह भंडार।
जिनका वैभव देख कर, भक्त हुआ संसार॥
सो जिनस्तुति हम करें, करके नमोऽस्तु आज।
हृदय कमल पर आइए, परम पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूह अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हाकलिका)

गुण जल के प्रभु सागर हो, रत्नों के रत्नाकर हो।
प्रासुक जल से हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

प्रभु गुण छाया पाए हो, शीतलता सुख लाए हो।
लेकर चंदन हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भव का चक्र नशाएँ हो, जिनवर प्रभु कहलाए हो।
पुंज चढ़ाकर हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

किया काम का काम तमाम, प्रभु निज में रमते अविराम।
पुष्प चढ़ाकर हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चिदानंद मे लीन हुए, सिद्धशरण आसीन हुए।
हम नैवेद्य चढ़ा पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधकार को दूर किये, धर्म तत्त्व प्रभु पूर दिए।
दीप आरती ले पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के हैं जाल यहाँ, फसे न प्रभु के लाल यहाँ।
धूप चढ़ाकर हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हमें भक्ति फल प्रभु दे दो, अपनी शरण हमें ले लो।
फल अर्पित कर हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

भक्त सिद्ध अरिहंत भजें, जिनवर सम अध्यात्म सजें।
अर्घ चढ़ाकर हम पूजें, करके नमोऽस्तु गुण खोजें ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

दोष-वर्णन (दोहा)

क्षुधा दोष में फँस रहा, यह सारा संसार।
क्षुधाजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं क्षुधाजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 1 ॥

तृषा दोष से दुख सहें, जग-जन अपरम्पार।
तृषाजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं तृषाजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 2 ॥

वृद्ध दशा के दोष से, बच न सके संसार।
वृद्धजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं वृद्धजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 3 ॥

मन वच तन के रोग का, रोगी है संसार।
रोगजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं रोगजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 4 ॥

जन्म दोष के दुख सहे, भव-भव में संसार।
जन्मजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं जन्मजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 5 ॥

मृत्यु वेदना को सहें, डर-डर के संसार।
मृत्युजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं मृत्युजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 6 ॥

सात तरह के भय सहें, भयाकुलित संसार।
भयविजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं भयजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 7 ॥

आठ मदों से मदित हैं, यह मानी संसार।
मदविजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं मदजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 8 ॥

राग-आग में जल रहा, सदा-सदा संसार।
रागजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं रागजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 9 ॥

द्वेष आंधियों में बहे, यह द्वेषी संसार।
द्वेषजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं द्वेषजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 10 ॥

मोह दोष से है दुखी, यह मोही संसार।
मोहजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं मोहजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 11 ॥

चिंता के साम्राज्य में, चिंतित है संसार।
चिंताजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं चिंताजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 12 ॥

अरति दोष से है दुखी, अपमानित संसार।
अरतिजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अरतिजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 13 ॥

निद्रा जिनमुद्रा हरे, सोया है संसार।
निद्राजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं निद्राजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 14 ॥

चमत्कार को कर रहा, नमस्कार संसार।
हर्षजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं हर्षजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 15 ॥

विषाद दुख में खो रहा, तत्त्वज्ञान संसार।
विषादजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं विषादजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 16 ॥

जिसे पसीना आ रहा, वह दुखिया संसार।
स्वेदजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं स्वेदजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 17 ॥

परिश्रम करके थक रहा, खेद जन्य संसार।
खेदजयी जिनदेव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं खेदजयी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 18 ॥

गुण-वर्णन (सखी)

तज मोह कर्म मदिरा सम, गुण अनन्त सम्यक् पाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं क्षायिकसम्यग्दर्शनगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 19 ॥

तज द्वारपाल सम दर्शन, हम अनन्तदर्शन पाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अनन्तदर्शनगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥ 20 ॥

तज ज्ञान आवरण जैसा, गुण ज्ञान अनन्ता पाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अनन्तज्ञानगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 20 ॥

तज वेदनीय असि मीठी, गुण अव्यावाधी पाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अव्यावाधत्वगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 21 ॥

तज आयु शृंखला जैसी, गुण अवगाहन प्रगटाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अवगाहनत्वगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 22 ॥

तज नाम चित्रकारों सम, सूक्ष्मत्व गुणी हो जाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं सूक्ष्मत्वगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 23 ॥

तज गोत्र कुम्भकारों सम, गुण अगुरुलघु झलकाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अगुरुलघुत्वगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 24 ॥

तज अन्तराय भण्डारी, गुण वीर्य अनन्ता पाएँ।
ऐसे जिन की स्तुति कर, हम अर्घ्य चढ़ा सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं अनन्तवीर्यत्वगुणी जिनदेवेभ्यो अर्घ्य... ॥ 25 ॥

पूर्णार्घ्य (वसंततिलका)

अर्हंत सिद्ध जिनदेव तुम्हें नमोऽस्तु।
संसार के भ्रमण से बचने जयोऽस्तु॥
हों अष्टकर्म विजयी हम मोक्षधामी।
दो प्रार्थना पर जरा कुछ ध्यान स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप मंत्र : **णमो जिणाणं** अथवा

ॐ ह्रीं श्री जिनवरेभ्यो नमः ।

जयमाला

(दोहा)

सिद्धशिला पर सिद्ध हैं, समवसरण जिनराज।
जिनवर स्तुति हम करें, करके नमोऽस्तु आज॥

(चौपाई)

भरा दुखों से ये संसार, तीन काल में दिखे न सार।
ऐसा हुआ जिन्हें सद्ज्ञान, वो चाहें अपना कल्याण॥1॥
सो संसार दुखों को त्याग, भव भोगों से कर वैराग्य।
बनें दिगम्बर श्री मुनिराज, करें तपस्या हों जिनराज॥2॥
समवसरण में हों आसीन, सो जग वैभव हुआ अधीन।
हों शतेंद्र चक्री भी दास, भक्त न होते कभी निराश॥3॥
जिनस्तुति का करके पाठ, ऋद्धि-सिद्धि के हों सम्राट।
फिर तो यूँ ही पुण्य कमाएँ, रोग शोक दुख पाप नशाएँ॥4॥
ना संकट भय भूत सताएँ, भक्त जगत में नाम कमाएँ।
कर्म हरें शुद्धातम ध्याएँ, मुक्तिवधू पा सिद्ध कहाएँ॥5॥
प्रभु अरिहंत सिद्ध भगवान, जो सबके आदर्श महान।
अतः किया स्तुति गुणगान, भूल क्षमा कर दो वरदान॥6॥
जिससे हो सुख शांति विकास, कर्म महामारी का नाश।
बने न कोई दुख का पात्र, मंगल-मंगल हो बस मात्र॥7॥
मिले भक्ति फल बस यह देव, भक्त समर्पित रहें सदैव।
सुन लो यही प्रार्थना नाथ, भक्तों की रखना नित बात॥8॥

'सुव्रत' को दो विद्याज्ञान, जब तक मिलें ना सुख निर्वाण।
तब तक जब भी निकलें प्राण, जिनस्तुति से हो कल्याण॥9॥

(दोहा)

जिनस्तुति से नित बनें, भवसुख शिवसुख योग।
जिनस्तुति सो हम करें, पाएँ चेतन भोग॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री जिनवर समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें पूज्य जिनदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, जिनदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

जिनस्तुति विधान आरती

(लय-छूम छूम छना नना बाजे...)

छूम-छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥
श्री अरिहंत जिनेश्वर स्वमी, पूज्य सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानी-2
जिनस्तुति मैं गाऊँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥1॥
प्रभु निर्दोष गुणी उपदेशी, वीतराग सर्वज्ञ हितैषी-2
भक्तों के कल्याणी, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥2॥
जिनशासन के लक्ष्य सहारे, रोग-शोक दुख-दर्द निवारे-2
मोक्षमार्ग के दाता, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥3॥
आशीर्वाद यही बस देना, चरण-शरण में सबको लेना-2
'सुव्रत' 'विद्या' पाएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥4॥